आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:25-01-15

आज भाग्यविधाता बाप हम भाग्यशाली बच्चों को सारे कल्प में जन्म-जन्मान्तर के लिए सम्माननीय बनकर पार्ट बजाने के लिए सम्मान पर पाठ पढ़ाते हुए कहा, जो अभी सर्व को सम्मान देते हैं वही विशेष आत्मा वर्तमान समय और जन्म-जन्मान्तर भी अन्य आत्माओं द्वारा सम्मान लेने के पात्र बनते हैं. जैसे बापदादा भी साकार सृष्टि पर पार्ट बजाते आदि काल से पहले बच्चों को सम्मान दिया. बच्चों को स्वयं से भी श्रेष्ठ मानकर बच्चों के आगे समर्पण हुआ. पहले बच्चे पीछे बाप, बच्चे सिर के ताज बनते, बच्चे ही ड्बल पूज्य बनते, बच्चे ही बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनते हैं. जैसे बाप ने बच्चों का आदिकाल से सम्मान रखा - ऐसे ही फॉलो फादर करने वाले बच्चे आदिकाल से अपना सम्मान का रिकार्ड बहुत अच्छा रखते आये हैं. अब हरेक अपने में चेक करें कि हमारा रिकार्ड कैसा रहा.

बाबा ने हम बच्चों को चार बातों में हमारा सम्मान का रिकार्ड चेक करने को कहा हैं. १. बाप को हम पूरा सम्मान देते है? २. बाप द्वारा मिली हुई नॉलेज को पूरा सम्मान देते है? ३. स्वयं भी स्वमान में रहते है? ४. सम्बन्ध-समपर्क में आने वाली सभी आत्माओं को सम्मान देते है?

१. बाप को पूरा सम्मान देते है?

- बाप को सम्मान देना अर्थात सदा बाप जैसा है वैसे स्वरूप से, यथार्थ पहचान से बाप के साथ सर्व सम्बन्धों की मर्यादाओं को निभाते है? बाप ने दी हुई श्रीमत् पर एक्यूरेट चलकर फॉलो फादर करते है?
- बाप का शिक्षक के रुप में सम्मान रखना अर्थात बाप जो सदा हर रोज मुरलीओं द्वारा पढ़ाई पढ़ाते है उसमें रेग्युलर और पंचुअल रहते है? पढ़ाई की हर सबजेक्ट को फ़ूल अटेन्शन देते है?
- बाप का सतगुरु के रुप में सम्मान रखना अर्थात सतगुरु की आज्ञा है कि देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध भूलकर देही स्वरूप अर्थात सतगुरु के समान निराकारी स्थिति में रहने का अभ्यास करते है? सदा घर वापस जाने के लिए एवररेडी रहते है?

- बाप का साजन के रुप में सम्बन्ध का सम्मान रखना अर्थात हर संकल्प और सेकेण्ड में उसी एक की लगन में आशिक रहना. तुम्ही से खाऊं, तुम्हीं से हर कार्य में सदा संग रहूँ.....इस वफादारी को निभाना.
- बाप का सखा वा बंधु के रुप में सम्बन्ध का सम्मान रखना अर्थात सदा बाप को सर्व बातों में अपना साथी पन का अनुभव करना.
ऐसे सर्व सम्बन्धों का नाता निभाना ही बाप को सम्मान देना हैं. एक बाप दूसरा न कोई - बाप ने कहा और बच्चों ने किया. बाबा के कदम के ऊपर कदम रख चलना. सिर्फ एक ही श्रीमत् बुद्धि में हो - सुनो तो भी बाप से, बोलो तो भी बाप ने जो बताया, देखो तो भी एक बाप को, चलो तो भी एक बाप के साथ, सोचो तो भी बाप की बातें सोचो, करो तो भी बाप के सुनाये हुए श्रेष्ठ कर्म करो. इसको कहा जाता है बाप को पूरा सम्मान देना.

२. बाप द्वारा मिली हुई नॉलेज को पूरा सम्मान देते है?

- बाप द्वारा मिली हुई नॉलेज को पूरा सम्मान देना अर्थात आदि से अभी तक जो भी महावाक्य बाप ने उच्चारण कीये है उन हर महावाक्य में अटल निश्चय हो. कोई भी प्रकार का व्यर्थ क्वेश्चन मन में न उठे, ज्ञान में कभी भी संशय न उठे.

३. स्वयं भी स्वमान में रहते है?

स्वयं के स्वमान में रहना ही स्वयं को सम्मान देना हैं. बाबा द्वारा हमारे इस अलौकिक श्रेष्ठ जीवन वा ब्राह्मण जीवन के जो भी स्वमान वा अनेक गुणों और कर्तव्य के आधार पर जो हमारे स्वरूप वा स्थिति का गायन है - जैसे स्वदर्शन चक्रधारी, ज्ञान स्वरूप, प्रेम स्वरूप, फरिश्तेपन की स्थिति को अनुभव करना वा ऐसी स्थिति में स्थित रहना. बाबा ने मुझे जो भी स्वमान दिये है वैसा ही मैं हूँ ऐसा समझकर चलना.
कुछ स्वमान की प्रैक्टिस कर सकते है.
- मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ.
- मैं शिवबाबा का बच्चा हूँ. मैं बाबा की बेहद की प्रोपर्टी के वर्सा का अधिकारी हूँ.
- मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ.

४. सम्बन्ध-समपर्क में आने वाली सभी आत्माओं को सम्मान देते है?

सम्बन्ध-समपर्क में आने वाली सभी आत्माओं को सम्मान देना अर्थात,
- हर आत्मा को चाहे ब्राह्मण आत्मा, चाहे अज्ञानी आत्मा हो लेकिन हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ भावना अर्थात ऊंचा उठाने की वा आगे बढ़ाने की भावना हो, विश्व कल्याण की कामना हो इसी धारणा से हर आत्मा से सम्पर्क में आना.
- सदा आत्मा के गुणों वा विशेषताओं को देखना, अवगुण को देखते हुए न देखना वा उससे भी ऊंचा अपनी शुभ वृति से वा शुभचिन्तक स्थिति से अन्य के अवगुण को भी परिवर्तन करना.
- सदा अपने स्मृति की समर्थी द्वारा अन्य आत्माओं का सहयोगी बनना.
- सदा "पहले आप" का मंत्र संकल्प और कर्म में लाना, किसी की भी कमजोरी वा अवगुण को अपनी कमजोरी वा अवगुण समझ, वर्णन करने के बजाए वा फैलाने के बजाए समाना और परिवर्तन करना.
- किसी की भी कमजोरी की बड़ी बात को छोटा करना, पहाड़ को राई बनाना.
- दिलशिकस्त को शक्तिमान बनाना, संग के रंग में नहीं आना, सदा सबको उमंग-उत्साह में लाना.

ऐसे चारों ही बातों को सम्मान देने वाले विश्व कि आत्माओं द्वारा सम्मान लेने के पात्र बनते हैं अर्थात अब विश्व कल्याणकारी रुप में और भविष्य विश्व महाराजन के रुप में और मध्य में श्रेष्ठ पूज्य के रुप में प्रसिद्ध होते हैं. सर्व को सम्मान देना अर्थात सर्व से सम्मान लेना हैं. देना ही लेना हो जाता हैं. बापदादा कहते है यहाँ एक देना और दस पाना हैं. यह तो सहज हुआ ना.

ॐ शांति.

Experiences/Feedbacks/Queries to Atma Bhai on email - a.brahmin.soul@gmail.com .